जब बाबू मूलचन्द जी ने स्वयं को अर्थी की तरह बांधने को कहा

-डा. स्वतन्त्र जैन

जन्म दिवस पर विशेष

आज जब राजनीति ने इतना विकराल रूप ले लिया है कि लगभग हर पार्टी के नेता धर्म-संप्रदाय, जात-पात, भाषा व प्रांतीयता के नाम पर केवल वोट की राजनीति के लिये ही आपस में शांति से रहते हुए लोगों को बांटने के लिये एक-दूसरे से बाजी मारने में लगी हुई है। ऐसे नाजुक समय में स्वतन्त्रता सेनानी एवं गांधीवादी नेता और धार्मिक एकता के सिपाही बाबू मूलचन्द जैन, जिनका आज 103वां जन्म-दिवस है, की दिल को छू देने वाली कुछ यादें ताजा हो आईं हैं। सिपाही इस लिये कहा है कि वे धार्मिक व सामाजिक एकता के लिये कोरे भाषण ही नहीं देते थे, अपितु एक सच्चे सिपाही की तरह जान की बाजी भी लगा सकते थे।

हममें से बहुत से लोगों को यह पता होगा कि स्वर्ण मंदिर, अमृतसर में जून 1984 को हुए ऑपरेशन ब्लूस्टार के बाद इक्कतीस अक्टूबर 1984 को देहली में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की अपने ही दो सिख सुरक्षा कर्मियों द्वारा निर्मम हत्या के बाद सारे देश में सिख समुदाय के विरुद्ध रोष फैल गया, खून खराबा आरंभ हो गया और स्थान-स्थान पर इस समुदाय के विरुद्ध धरने व प्रदर्शन होने लगे। इसी के तहत करनाल जिला बार एसोसिएशन की एक आपातकालीन बैठक हुई जिसमें बाबू मूलचन्द जी एवं उनके वकील पुत्र अशोक जैन के अलावा करनाल के कई वरिष्ठ वकील व जानी मानी हस्तियां भी शामिल हुईं। सभा में श्रीमती गांधी को श्रद्धांजली देने के बाद शहर में एक प्रोटेस्ट मार्च (रोष जलूस) निकालने का निर्णय हुआ, परन्तु बाबूजी इस निर्णय से अप्रसन्न ही नहीं वरन अत्यन्त आहत भी थे क्योंकि उनका सोचना था कि इस रोष मार्च से सिखों के विरुद्ध वातावरण बनेगा और साम्प्रदायिक दंगे भड़केंगे तथा खून-खराबा होगा। बाबूजी हर हाल में अपने शहर को इस सांप्रदायिकता की आग से बचाना चाहते थे। अतः बाबूजी ने बैठक में वकीलों को समझाते हुए कहा कि, ''कुछ व्यक्तियों के जुर्म की सज़ा सारे सिख संप्रदाय और समस्त समाज को नहीं दी जा सकती।'' लेकिन बैठक में उपस्थित अधिकतर वकील बाबूजी के इस विचार से सहमत नहीं हुए। वे सब बाबूजी के खिलाफ हो गए और उन्होंने बहुमत से इस निर्णय पर मोहर लगा दी, जिस पर बाबूजी ने अपना विरोध-मत रजिस्टर करने को कहा। अंततः बार एसोसिएशन ने शहर में रोष मार्च निकालने की घोषणा कर दी। जब जलूस की तैयारियां होने लगी तो वकीलों ने बाबूजी को भी फिर से एक बार और जलूस में शामिल होने को कहा। और यह भी कहा कि, 'बाबूजी, यदि आप इस जलूस में शामिल नहीं हुए तो आप पर अनुशासनात्मक कार्यवाही हो सकती है'। लेकिन बाबूजी उस धमकी की परवाह न करते हुए

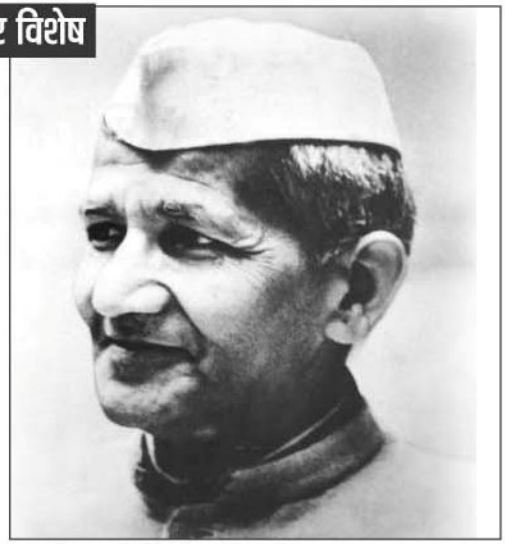

अपनी बात पर ही अडिग रहे व बोलेः

''आप चाहें तो मुझे अर्थी पर जबरदस्ती लिटा कर मुर्दे की तरह बांध कर जलूस में ले जा सकते हो,

अपनी मर्जी से तो मैं बिलकुल नहीं जाऊंगा।''

बाबूजी की यह अप्रत्याशित बात सुन कर वहां उपस्थित समान विचारों वाले वकील भाई सहम गए और कहने लगे कि वैसे तो हम बार एसोसिएशन के निर्णय के साथ हैं, लेकिन जब बाबूजी जैसे अहिंसक गांधीवादी का यह दृढ़ मत है तो अवश्य इसमें कोई न कोई राज होगा। हम भी बाबूजी का विरोध नहीं कर सकते। धीरे-धीरे काफी वकील बाबूजी के साथ हो गए और जलूस निकालने का निर्णय छोड़ दिया गया। उनके सबसे छोटे सुपुत्र अशोक जैन इस घटना के गवाह हैं।

बाबू मूलचन्द जैन जी का समाज की एकता, अखंडता और भाई चारे को बरकरार रखने के प्रति अपने उत्तरादायित्व का अहसास और समाज के विभिन्न सम्प्रदायों में सोहार्दता एवं मिठास बनाए रखने के प्रति उनकी संवेदन शीलता और उनके 'एकला चालो' की दृढ़ नीति गांधीजी का प्रिय भजन, 'यदि तोर डाक सुने कोई ना आसे, ताबे एकला चालो रे' ने करनाल में दोनों समुदायों के बीच वैमनस्य भाव बढ़ने और ऑपरेशन ब्लूस्टार और उसके बाद उपजी स्थिति से खून खराबा होने से बचा लिया, क्योंकिः

समाज के विघटन को वे कतई बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, और जो बात, जो विचार, जो निर्णय समाज को विघटित करता हो, उसे वे कभी मान नहीं सकते थे, फिर चाहे सारा समाज, सारे साथी उनके विरुद्ध हो जाए। यही उनका सत्याग्रह या सही बात के लिए शांति-पूर्वक डटे रहने का अडिग साहस था जो उन्हें और नेताओं की भीड़ से अलग करता है।

परन्तु हां, उन्होंने ऐसा भी कभी नहीं किया कि किसी एक धर्म-संप्रदाय या जाति का पक्ष लेने के लिये किसी दूसरे धर्म-संप्रदाय, जाति या राजनीतिक पार्टी के लोगों को बुरा-भला कह कर आहत किया हो या उन्हें बदनाम करने का प्रयास किया हो। उनका जीवन ऐसे कई दृष्टांतों से भरा है जब उनके सामने अपने और दूसरे धर्म, जात-बिरादरी या पार्टी के लोगों में से किसी एक को चुनने का प्रश्न खड़ा हुआ तो उन्होंने सत्य, न्याय, इंसानियत और आपसी भाईचारे का साथ दिया पर कभी भी दूसरे पक्ष को चोट नहीं पहुंचाई। अगर चोट पहुंचाई भी तो केवल अपने आप को। ऐसा ही एक ज्वलंत दृष्टान्त आगे दिया है:

1952 में पंजाब विधान-सभा (यह हरियाणा बनने से पहले की घटना है) के चुनाव के दौरान बाबूजी के समालखा चुनाव क्षेत्रा में प्रचार के दौरान एक महत्वपूर्ण घटना वाल्मिकियों से संबंधित है। खोजगीपुर गांव के वाल्मिकियों ने बाबूजी को चतर सिंह पारचा वाल्मीकि लीडर के द्वारा चाय के लिए दावत दी। बाबूजी पक्के गांधीवादी थे, छुआछूत में उनकी कभी आस्था नहीं रही। उनके घर उनके वाल्मीकि कार्यकर्ता उन्ही के बर्तनों में खाना खाते थे, इसलिए बाबूजी ने खुशी से उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। यह समाचार ज्योंही उनकी बिरादरी के कार्यकर्ताओं को मिला तो घबराकर बाबूजी को कहने लगे कि 'आपने वाल्मीकियों का निमंत्रण स्वीकार करके बहुत गलती की है। सब ब्राह्मण, जाट, महाजन और बाकी ऊंची बिरादरी वाले आपके विरुद्ध हो जायेंगे और आप चुनाव हार जायेंगे'। बाबूजी ने तुरन्त जवाब दियाः

'यदि मैं वाल्मिकियों के घर चाय पीने से चुनाव हारता हूं तो मुझे यह हार भी खुशी से स्वीकार है।'

उनकी चुनौती के बावजूद बाबूजी ने वाल्मीकियों के यहां चाय पी। ऊंची बिरादरी के भी बहुत से कार्यकर्ताओं ने वहां चाय पीकर पहली बार छुआछूत की जालिम रस्म को तोड़ा। यह कोई वोट की राजनीति नहीं थी। यह सब मानवों को मन, वचन और कर्म से बराबर मानने और व्यवहार में दिखाने की बात थी। और राजनेता यदि कोई आदर्श स्थापित करें तो जनता में भी उसका न केवल अच्छा प्रभाव पड़ता है, वरन बहुत से लोग उनका अनुसरण करने का प्रयास करते हैं। शायद, यही कारण रहा होगा कि गांव मुहावटी, समालखा (पानीपत), हरियाणा के सत्तासी वर्षीय स्वर्गीय राम स्वरूप-प्रजापत ने अपनी 28 अगस्त 2010 की मुलाकात में निम्न उद्गार प्रकट किये :

'इस एरिया पर बाबूजी के इतने उपकार हैं कि यहां के दरख्त भी उनका नाम सुन कर प्रसन्नचित्त हो जाते हैं।